हिन्दी भाषा का वैश्विक विस्तार - चुनौतियाँ और सम्भानाएँ - एक दृष्टि

- डॉ. रमापति तिवारी एवं
विकास पाण्डेय*

सारांश

हिन्दी भाषा अत्यन्त प्राचीन एवं सुदृढ़ भाषा रही है जो आज भी पूरे विश्व में काफी महत्त्वपूर्ण भाषा है। वैश्विक स्तर पर इस भाषा के विस्तार की अपार सम्भावनाएँ हैं और यदि सच्चे मन से प्रयास किया जाए तो निश्चित रूप से इसे विश्व की अग्रिम भाषाओं की प्रथम पंक्ति में शामिल किया जा सकता है। अन्य वैश्विक भाषाओं यथा अंग्रेजी, फ्रेंच आदि की तुलना में हिंदी भाषा काफी प्रभावशाली है जिसका सही रूप में विश्व में प्रस्तुतीकरण करने की ज़रूरत है ताकि यह सभी जगहों, देशों आदि में सहज रूप से स्वीकार्य हो सके। स्वभावतः ही इसके लिए हमें अत्यन्त चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। मूलतः इस भाषा के विस्तार के मार्ग में वैश्विक चुनौतियों का सूचीकरण कर हमें इसके समाधान की सम्भावनाओं की तलाश करनी होगी ताकि सही परिपेक्ष्य में शीघ्र ही यह भाषा देश और विदेश के जनसमुदाय तक आसानी से पहुँच सके जहाँ तक कि इसके विस्तार का कार्य शेष है। यह बात निर्विवादित है कि हिंदी भाषा को सफल बनाने के लिए निश्चित तौर पर हमें इसका उपयोग तकनीकी विषयों से जोड़ना होगा। विभिन्न क्षेत्रों यथा सूचना प्रौद्योगिकी, कार्यालयीन भाषा, चिकित्सा आदि के क्षेत्र में अपने प्रयासों से इस भाषा का अधिक से अधिक उपयोग बढ़ाना होगा।

प्रस्तुत आलेख में हम ऐसी कार्यनीति और प्रयासों पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित करेंगे जिससे हमारी हिंदी भाषा सारी चुनौतियों और बाधाओं को पार कर सम्भावनाओं के उच्चतम स्तर को प्राप्त कर सके और सही मायने में हिंदी भाषा को वैश्विक भाषा के रूप में इसे गौरवान्वित किया जा सके।

●

---

* राँची (झारखण्ड), भारत।

सम्पर्क : 1. डॉ. रमापति तिवारी (मो.: 08002505073, ई-मेल : drtiwari57@gmail.com)
2. विकास पाण्डेय (मो.: 09835753772, ई-मेल : bikas_pandey@rediffmail.com / bikas1971@gmail.com)